











 रंजीत पवार

**5** निया में कहीं और की अपेक्षा भारत में लोग अधिक आत्महत्या कर रहे हैं। वर्ष 2016 में भारत में प्रति एक लाख लोगों पर आत्महत्या की दर 16.5 रही, जबकि वैश्विक औसत 10.5 थी। यहां सवाल स्वाभाविक है कि लोगों को अपनी जान लेने की तरफ क्या चीज़ धकेलती है? क्या आत्महत्या की व्याधि एक व्यक्तिगत घटना है या हमारी सामाजिक, प्रशासनिक, आर्थिक, शैक्षणिक और धार्मिक व्यवस्था को आगे आकर इसकी जिम्मेदारी लेनी चाहिए? मानसिक रोग, ड्रास की लत, तलाक, असफल प्रेम संबंध, यौन हिंसा, दिवालियापन, शैक्षणिक विफलता, बेरोजगारी और गरीबी खुदकुशी करने के मुख्य कारण हैं। इनके अलावा दक्षिण एशियाई देशों में एक और बजह है : समाज में इज्जत को ठेस। भारत में उच्च आत्महत्या दर की वजहों की, विशेषकर समाज के कुछ खास वर्गों में, जांच की जानी चाहिए। विश्व खुशहाली रिपोर्ट-2024 में भारत को 143 देशों में 126वां स्थान मिला है, यह पड़ास के पाकिस्तान और नेपाल से भी नीचे है। तो भारत में इतने सारे लोग दुखी क्यों हैं? सामान्य कारकों के अलावा, भारत में आत्महत्या के ग्राफ में एक अजीब सी समानता भी है- युवा, निम्न आय वर्ग, किसान और महिलाओं में आत्महत्या की दर ज्यादा है। 15 से 29 आयु वर्ग, जो भारत की जनसंख्या का 53.7 प्रतिशत है, उसमें मौत के कारणों में आत्महत्याओं का हिस्सा काफी अधिक है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो की 2020 रिपोर्ट बताती है, उस साल हर दिन 35 से अधिक छात्रों ने आत्महत्या की। इस वर्ष कोटा में अब तक 13



छात्र यह अतिशयी कदम उठा चुके हैं, जबकि पिछले साल देश के इस कोरिंग के गढ़ में 26 छात्रों ने खुदकुशी की थी। गला-काट प्रतिस्पर्धा, उच्च प्रदर्शन का दबाव और असफलता का डर जिसको कभी-कभी माता-पिता का अधीर रखवा भी हवा देता है- युवा मानस के लिए इनको संभालना बहुत मुश्किल हो सकता है। नौकरी के चाहवान बहुत हैं और नौकरियां अल्पतं कम। लगभग 10 प्रतिशत भारतीय युवा बेरोजगार, नारुश, चिंतित हैं और उनके पास अपनी रोजमर्रा की जरूरतें तक पूरा करने के लिए संसाधन नहीं

हैं। रोजगार के मामले में महिलाएं पुरुषों से काफी नीचे हैं। बहुत बड़ी संख्या में नौकरी के चाहवानों के लिए न सिर्फ नौकरियां बहुत कम हैं, बल्कि निष्पक्ष और योग्यता आधारित भर्तियों की भी कमी है, जिससे आक्रोश और अरुचि उत्पन्न होती है। राजस्थान लोक सेवा आयोग के पेपर लीक और विरामों में हेरफेरी को लेकर चल रही कानूनी कार्रवाई के कारण पिछले चार वर्षों में कई परीक्षाएं दद्द करनी पड़ी हैं। अन्य राज्य भी इसी क्रिस्म की स्थिति से त्रस्त हैं। आत्महत्या से होने वाली मौतों में दो तिहाई हिस्सा न्यूनतम आय वर्ग के लोगों का

सामाजिक दायरे में कई लोग रहते हैं। लेकिन कुछ ऐसे लोग होते हैं, जिन्हें हम पंसद नहीं करते। लेकिन इसके बावजूद हमें उनकी मेजबानी करनी पड़ती है। क्योंकि इनकी मेजबानी करना जटिली हो जाता है या हम 'ना' नहीं कह पाते, इसलिए हमें इसकी मेजबानी करनी पड़ती है। चाणक्य ऐसे लोगों के बाटे में बताते हैं, इनका बहुत अधिक मान-सम्मान या सत्कार करने से बचना चाहिए।

पटना, रविवार 08 सितंबर 2024  
[www.live7tv.com](http://www.live7tv.com)

# मुफ्त की राजनीति का हश्श बया का घोसला अद्वृत इंजीनियरिंग का उदाहरण

है कि वित्तीय संकट दरवाजे पर दस्तक दे रहा है। लागतार बढ़ते रोजस्व घाटे व बड़ी होती देनदारियों से सत्ता में बैठे रोजनेताओं को बख्खबी पता चल रहा है कि सस्ती लोकप्रियता पाने के लिये मुफ्त का जो चंदन विसा जा रहा था, वह राज्य की अर्थव्यवस्था पर भारी पड़ रहा है। यहां तक कि कर्मचारियों को वेतन व रिटायर कर्मियों को समय पर पेंशन देने में मुश्किल आ रही है। गाल बजाकर बड़ी-बड़ी घोषणाएं करने वाले राजनेता तनखाह व पेंशन की तारीख आगे बढ़ाकर दावा कर रहे हैं कि इससे राज्य को आर्थिक बचत होने वाली है। संवेदनहीन राजनेताओं को इस बात का अहसास नहीं है कि वेतन पर अश्रित कर्मियों को राशन-पानी, बच्चों की स्कूल की फीस व लोन की ईएमआई समय पर चुकानी होती है। जिसको लेकर बैंक कोई रहम नहीं दिखाते हैं। राजनेताओं के आय के तमाम वैध-अवैध स्रोत होते हैं, कर्मचारी तो इकलौती तनखाह के भरोसे जीवन-यापन करता है। बहरहाल, चुनाव से पूर्व मुफ्त प्रलोभनों की तमाम घोषणाएं करने वाले राजनेताओं को अहसास हो चला है कि राज्य के खजाने में उनकी राजनीतिक विलसिता का बोझ ढोने का दमखम नहीं बचा है। विभिन्न दलों की शाहखर्ची ने राज्यों की आर्थिकी की हालत पहले ही पस्त कर रखी है। राजनेताओं ने कभी वित्तीय अनुशासन का पालन नहीं किया। दिल्ली से लेकर पंजाब तक आप सरकारों ने तमाम तरह की मुफ्त की रेवड़ियां बांटी हैं। दरअसल, जिस भी नागरिक सुविधा को मुफ्त किया जाता है, उस विभाग का तो भट्ठा बैठ जाता है। फिर उसकी आर्थिकी कभी नहीं संभल पाती। कैग की हालिया रिपोर्ट बताती है कि पंजाब में एक निर्धारित यूनिट तक मुफ्त बिजली बांटे जाने से राज्य के अस्सी फीसदी घरेलू उपभोक्ता मुफ्त की बिजली इस्तेमाल कर रहे हैं। जाहिरा बात है कि मुफ्त में कुछ नहीं मिलता। मुफ्त की राजनीति के चलते इन महकमों के विस्तार व विकास पर ब्रेक लग जाता है। बहरहाल, पंजाब के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक यानी कैग की हालिया रिपोर्ट राज्य की वित्तीय प्राप्तियों और खर्चों के बीच बढ़ते राजकोषीय अंतर की ओर इशारा करती है। बीते वित्तीय वर्ष की आर्थिक बदलाली को दर्शाती कैग की रिपोर्ट बताती है कि कैसे राज्य सरकार की आय का बड़ा हिस्सा पुराने कर्ज चुकाने में चला जा रहा है। यह भी चिंताजनक है कि राज्य का राजस्व घाटा, सकल राज्य घरेलू उत्पाद के 1.99 फीसदी लक्ष्य के मुकाबले 3.87 फीसदी तक जा पहुंचा है। यह बेहद चिंताजनक स्थिति है कि राज्य का सार्वजनिक क्रण जीएसडीपी का 44.12 फीसदी हो गया है।



**शि** ल्प कौशल, इंजीनियरिंग और वास्तुकला के मिसाल देते चिड़िया के घोंसले अक्सर नदी नहीं के किनारे पेढ़ों की शाखाओं पर लटकते देखने को मिल जाते हैं। ये घोंसले बया पक्षी के होते हैं जो विअपने घोंसले के निर्माण कौशल के लिए प्रसिद्ध है। पक्षी एक बल्बनुमा कक्ष जैसा घोंसला बनाते हैं, जब देखने में लालटेन जैसे लगते हैं जिन्हे घास, पत्तियाँ और टहनियाँ का उपयोग करके बनाया जाता है। ये घोंसले मजबूत होते हैं और पक्षियों और उनके अंडों को सुरक्षा प्रदान करते हैं। बया का घोंसला अद्भुत इंजीनियरिंग के उदाहरण है, इसके निर्माण के लिए, मरम्मती धारों के उपयोग करते हुए यह पक्षी घोंसलों को छिजाइन करती है जो खुद को मजबूती से बांध लेता है। इस तरह वे घोंसलों ने बया वीवर को उनके इंजीनियरिंग कौशल के लिए मशहूर बना दिया है। ये घोंसले नर पक्षी द्वारा बनाते हैं जिसे वो मादा बया पक्षी को रिझान और आकर्षित करने के लिए बनाते हैं। प्रजनन के मौसम के दौरान, नर बया मादाओं को आकर्षित करने के लिए अपने घोंसले बनाने के कौशल का प्रदर्शन करते हैं। संभावित साथी के प्रभावित करने की उम्मीद में, वे सावधानी से अपने घोंसले बुनते और सजाते हैं। जब घोंसले निर्माण पूरा होता है, तब मादा उसे मान्यता देती है या छोड़ देती है और यह इस पर निर्भर करता है कि कितनी सुंदरता और मजबूती से घोंसला बनाया गया है। बया एक पोलीगेर्म पक्षी है जिसका अर्थ है कि नर एक से ज्यादा मादा के साथ मेटिंग करता है जबकि मादा सिर्फ़ एक नर के साथ ही मेटिंग करती है। कुशल वास्तुकारों की तरह बया भी विभिन्न आकृतियों और आकारों में अपने घोंसलों का निर्माण करते हैं। कुछ घोंसले पेढ़ के शाखाओं से लटकते हैं, जबकि अन्य लंबी घास के

जाप जन होता है। वह एक सामाजिक वदा है जो अक्सर कॉलोनियों में अपना घोसला बनाते हैं। वे निर्माण प्रक्रिया में एक दूसरे की मदद करते हुए सद्व्यवहार में एक साथ काम करते हैं। ये पक्षी अक्सर तीन साधनों को प्राथमिकता देते हैं जिनमे शामिल है खाना, पानी और सुरक्षा। ये पक्षी किसानों के लिए बेहद फायदेमंद होते हैं क्योंकि वे कीड़ों और कीटों को खाते हैं, जिससे

उनका आवादा का स्थानांतरण रूप से नियमित करने में मदद मिलती है। ब्यानिवासी पक्षी है, जिसका उत्तराधिकारी है कि वे लंबी दूरी तय नहीं करते हैं। वे आमतौर सालभर अपने पसंदीदा आवास में रहते हैं, अतः भारतीय जलवायु की गर्माहट का आनंद लेते हैं। ब्यानिवासी पक्षी वास्तव में प्रकृति के कलाकार हैं, जो अपने शानदार घोंसलों के माध्यम से अपनी रचनात्मकता दर्शाते हैं।

कारातों का प्रदर्शन करते हों जिनमें एक आपसी प्राकृतिक निर्माता है जो अपने घोंसलों को सुंदरता और सुरक्षा से भर देती है। इसकी खूबसूरती और अनोखापन को देखकर हम सभी को प्रेरित होना चाहिए कि हम भी अपने कौशल और विचारशीलता का उपयोग करके अपने जीवन को सुंदर बनाएं।  
 ( यह लेखक के निजी विचार हैं। )

# सर्पदंशः तुरंत उपचार और सावधानी में ही बचाव

जयसिंह रावत

**ब** रसात के इन दिनों में धन आदि की खेती का मौसम होता है, और यही समय सर्पदंश के लिए सबसे अधिक जीवितमपूर्ण होता है। सांप के काटने की घटनाएं अधिकांशतः ग्रामीण क्षेत्रों में होती हैं, जिससे स्त्री-पुरुष किसान, कृषि श्रमिक, और बच्चे सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। सर्पदंश के परिणामस्वरूप कुछ ही समय में मौत, लकवा, सांस लेने में कठिनाई, रक्तस्राव संबंधी विकार, किडनी फेल्योर, स्थायी विकलांगता, और अंग विच्छेदन हो सकते हैं। यह समस्या विकासशील देशों, विशेषकर कृषि प्रधान ग्रामीण और वन बस्तियों में देखी जाती है। ये घटनाएं स्वास्थ्य संकट नहीं हैं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक प्रभाव भी डालती हैं। हालांकि, इस समस्या को मानव-वन्यजीव संरक्षण की अन्य घटनाओं की तरह गंभीरता से नहीं लिया जाता है। इसलिए, विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे उत्त्यक्तिवर्धीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों की उपेक्षित स्वास्थ्य समस्या के रूप में वर्गीकृत किया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, हर साल दुनिया भर में लगभग 50.4 लाख लोग सांपों द्वारा काटे जाते हैं, और 81,410 से 1,37,880 लोग सर्पदंश से मृत्यु का शिकार होते हैं। इसके अतिरिक्त, लाखों लोग विकलांगता और अन्य गंभीर बीमारियों से ग्रस्त हो जाते हैं। हालांकि, सर्पदंश पर केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय, विश्व स्वास्थ्य संगठन और नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़ों में भारी अंतर होता है। 12 मार्च, 2024 को भारत में सर्पदंश से होने वाली मौतों की रेकथाम और



नियंत्रण के लिए राष्ट्रीय कार्य योजना की शुरूआत के समय जारी विवरण के अनुसार, भारत में हर

साल लगभग 30-40 लाख सर्पदंश के मामले होते हैं, जिनमें से लगभग 50,000 मौतें होती हैं,

जो वैश्विक सर्पदंश मौतों का लगभग आधा हिस्सा है। सर्पदंश के शिकार लोगों का केवल एक छोटा

सा हिस्सा ही अस्पतालों में रिपोर्ट करता है, जिससे सर्पदंश की वास्तविक संख्या दर्ज नहीं हो पाती। केंद्रीय स्वास्थ्य जांच ब्लूरो की रिपोर्ट (2016-2020) के अनुसार, भारत में सर्पदंश के मामलों की औसत वार्षिक आवृत्ति लगभग 3 लाख है और लगभग 2,000 मौतें सर्पदंश के कारण होती हैं। वास्तविक स्थिति यह है कि भारत में सर्पदंश से होने वाली मौतों की सटीक संख्या उपलब्ध नहीं है, क्योंकि ये घटनाएं अधिकांशतः ग्रामीण क्षेत्रों और बन बस्तियों में होती हैं, जहां पुलिस और अस्पतालों तक मामले नहीं पहुंचते और रिपोर्टिंग नहीं हो पाती। भारत में मानसून का मौसम, जो आमतौर पर जून से सितंबर तक रहता है, सर्पदंश के लिए सबसे संवेदनशील माना जाता है। इस मौसम में बाढ़ और पानी के कारण सांपों के प्राकृतिक आवास नष्ट हो जाते हैं, जिससे वे भोजन और आश्रय की तलाश में मानव बस्तियों की ओर आ जाते हैं। मानसून के दौरान कृषि गतिविधियां भी चरम पर होती हैं, और किसान व मजदूर अनजाने में सांपों के संपर्क में आ सकते हैं, जो ऊंची धास या मलबे के नीचे छिपे होते हैं। गर्म और गीली परिस्थितियों में शिकार की उपलब्धता बढ़ जाती है, जिससे सांपों की गतिविधियां भी बढ़ जाती हैं। जनसंख्या वृद्धि और मानव-जीव संर्वर्ग के कारण भारत में सांपों और मुरुओं के बीच संघर्ष बढ़ रहा है। मानव आवास विस्तार प्राकृतिक आवासों पर अतिक्रमण करता है, जिससे ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में सांपों के कटने की संभावना बढ़ जाती है। जलवायु परिवर्तन सांपों के व्यवहार को प्रभावित कर रहा है। बनों की कटाई और कृषि विस्तार के कारण सांप भोजन और आश्रय की तलाश में मानव बस्तियों की ओर खिंचे जा रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में समय पर चिकित्सा सहायता और एंटीवेनम की कमी मृत्यु दर को बढ़ाती है। भारत सरकार ने सर्पदंश से होने वाली मौतों की रोकथाम और नियंत्रण के लिए एक ग्रामीण कार्यवोजना शुरू की है, जिसका लक्ष्य 2030 तक सर्पदंश से होने वाली मौतों और विकलांगता की संख्या को आधा करना है। हालांकि, इस समस्या का असली समाधान सावधानी और प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाए रखने में है। सांप हमारे शत्रु नहीं हैं, जिनमें से 60 से अधिक विषेले, 40 हल्के रूप से विषेले और लगभग 180 जहर रहित प्रजातियां हैं। कोबरा, रसैल और वाइपर जैसी प्रजातियां अत्यन्त विषेली होती हैं, जबकि जहर रहित सांप बिना कारण मारे जाते हैं। सांप आमतौर पर आत्मरक्षा के लिए काटते हैं, इसलिए सतर्कता सबसे अच्छा बचाव है। धास, झाड़ियों और ढीली चट्ठानों के आसपास जाते समय लबी पैट और मजबूत जूते पहनें। किसानों को भारी धास या लकड़ी का सामान ढाते समय यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वहां सांप तो नहीं हैं। स्थानीय सांपों की प्रजातियों को पहचानें और बिना वजह झाड़ियों या धास में न घुसें। यदि सांप काट ले, तो घेरेलू उपायों की बजाय तुरंत चिकित्सा सहायता प्राप्त करें और एंटीवेनम का उपयोग करें। खुद से इलाज करने की कोशिश न करें, जैसे धाव को काटना या चूसना, क्योंकि यह स्थिति को और खराब कर सकता है।











